अजरकपुर से एक मुलाकात

फोटो, चित्र व लेखः
वास्वी ओझा

गुजरात के कच्छ ज़िले में एक छोटा-सा गाँव है अजरकपुर। जानते हो इस गाँव को यह नाम कैसे मिला?

अजरकपुर में ज़्यादातर कपड़ों पर छपाई का ही काम होता है। अजरकपुर में जो खास छपाई की जाती है वह अजरक कहलाती है। इसी से गाँव को उसका नाम मिला। आमतौर पर इसमें कुदरती (प्राकृतिक) रंगों का ही इस्तेमाल होता है। पर आजकल बहुत-से लोग रासायनिक रंगों का भी इस्तेमाल करने लगे हैं। अजरक की छपाई सिर्फ कच्छ में ही होती है। वैसे ही जैसे आँध्र प्रदेश में कलमकारी, राजस्थान में बगरु, मध्य प्रदेश में बाग आदि की छपाई होती है।

अजरक के रंग

अजरक में इस्तेमाल किए जाने वाले सभी रंग कुदरती चीज़ों से बनते हैं। जैसे, नीला रंग नील (इंडिगो) के पौधे से मिलता है। लाल रंग मजिष्ठा (मजीठा) के बीज और फिटकरी से बनाया जाता है। काला रंग बनाने के लिए लोहे की सलाखों को गुड़ और इमली के बीजों के साथ दस दिनों तक भिगो-कर रखा जाता है। फिर लोहे आदि को निकालकर बचे हुए पानी का इस्तेमाल काले रंग के लिए होता है। सफेद रंग के लिए चूने और गोंद का मिश्रण बनाया जाता है। हल्दी और अनार के छिलकों से पीला रंग पाया जाता है। जबकि नीले रंग पर हल्दी का छिड़काव करने से हरा रंग बन जाता है।

छपाई

अजरकपुर में मेरी मुलाकात एक परिवार से हुई जो अजरक की छपाई कुदरती रंगों से करते आए हैं। इस परिवार के सबसे बड़े सदस्य हैं अब्दुल रहमान बुद्धाजी। अब्दुल रहमान जी ने बताया कि अजरक में छोटे फूलों और बुलबुले जैसे बारीक आकारों के डिज़ाइन को कपड़े पर छापा जाता है। इस डिज़ाइन को कपड़े पर छापने के लिए लकड़ी के ब्लॉक या ठप्पे बनाए जाते हैं। इसके लिए एक खास लकड़ी मँगवाई जाती है। इसे वलसाड़ी साग कहते हैं। इस लकड़ी के छोटे-छोटे गुटकों पर बारीक डिज़ाइन उकेरा या खुदवाया जाता है। छपाई के लिए लकड़ी के ब्लॉक को कुदरती रंगों में हल्का-सा डुबोकर कपड़े पर छापा जाता है। इसे ठप्पा-छपाई या ब्लॉक प्रिंटिंग के नाम से जाना जाता है। ब्लॉक प्रिंटिंग के बाद ही पूरा कपड़ा किसी एक रंग में रंगा जाता है।

अजरक की शुरुआत

अजरक की शुरुआत सिन्ध प्रदेश से हुई है। यह प्रदेश अब हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान का हिस्सा है। कहते हैं कि अजरक की कला हड़प्पा सभ्यता के समय से मौजूद है। अरबी भाषा में अजारख का मतलब होता है नीला रंग। इसकी वजह यह हो सकती है कि अजरक की छपाई में नीले रंग का ज़्यादा प्रयोग होता है।

पहले अजरक की छपाई कपड़े के दोनों तरफ की जाती थी। अजरक को सिन्धी समाज का पारम्परिक वस्त्र माना जाता था। लोग इस कपड़े से पगड़ी, लुंगी और दुपट्टे बनाते थे। अजरक की चादर भी बना करती थी। शादी जैसे अवसरों पर लोग अपने रिश्तेदारों को तोहफे में अजरक दिया करते थे। अजरक की छपाई मोटे सूती कपड़े पर होती है। यह कपड़ा सर्दी में गरमाहट देता है और गर्मी में इसे पहनने से ठण्डक मिलती है।

अजरक की छपाई आज के समय में गुम-सी होती जा रही है। ऐसे समय में जो लोग इसे ज़िन्दा रखने की कोशिश में हैं उनका बड़ा अहसान है हम पर। यह मेरी अजरकपुर से पहली मुलाकात थी। तुमको भी अगर मौका मिले तो वहाँ ज़रूर जाना और इस काम में लगे लोगों से मिलना।

पलाश के फूलों से रंग

क्या तुम भी कुदरती रंग से कपड़े रंगना चाहते हो?

एक सूती कपड़ा लो। अगर कपड़े में कलफ लगा हो तो उसे धोकर निकाल दो। इस कपड़े पर पतले धागे से कसकर छोटी-छोटी चार गाँठें बाँध लो।

अब पलाश के फूलों को पानी डालकर अच्छी तरह से उबाल लो। इन्हें करीब दस मिनट तक उबलते रहने दो। अच्छे से उबल जाने पर पानी का रंग भी फूल जैसा हो जाएगा। पानी में से फूलों को निकालकर उसमें कपड़े को भिगो दो। आधे घण्टे तक डूबा रहने के बाद कपड़े को सूखने डाल दो। सूखने का बाद उसमें बँधी गाँठ को खोल दो। गाँठवाला हिस्सा सफेद रहेगा जबकि बाकी का कपड़ा हल्का-सा नारंगी रंग का हो जाएगा। इस तरह तुम मेंहदी पाउडर, अनार के छिलके आदि का भी इस्तेमाल कपड़े रंगने के लिए कर सकते हो। चकमक

अजरकपुर

गुजरात के कच्छ में एक गाँव है धमड़का। सालों पहले पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त से लोग यहाँ आकर बस गए थे। भारत में यह अजरक छपाई का सबसे बड़ा केन्द्र है। सदियों से इनके परिवार अजरक छपाई का ही काम करते आए हैं। 26 जनवरी 2001 को गुजरात में आए भूकम्प ने भारी तबाही मचाई। धमड़का भी ध्वस्त हो गया। पर इससे भी बड़ी चिन्ता की बात यह हुई कि भूकम्प से यहाँ के पानी में रासायनिक बदलाव हो गए। जान-माल के नुकसान की भरपाई तो समय के साथ हो भी जाए पर पानी में आए रासायनिक बदलाव से तो पूरा जीवन ही संकट में आ गया था। लोगों ने बैठकर चर्चाएँ कीं। तय हुआ कि कोई नई जगह देखी जाए। ज़मीन की खोज शुरू हुई। आखिर में भुज के पास 65 एकड़ ज़मीन खरीदी गई। और यहीं बसा अजरकपुर। भारत में शायद यह एकमात्र जगह है जिसका नाम किसी शिल्प के नाम पर पड़ा। वरना शिल्प को ही जगह के नाम से जाना जाता है। जैसे कोल्हापुरी चप्पलें, बनारसी साड़ियाँ, फिरोज़ाबाद की चूड़ियाँ आदि।

अजरक की एक खासियत यह है कि इसमें दोनों ओर की छपाई होती है। इसके लिए खास ठप्पे तैयार होते हैं। यह काम इतनी सफाई से होता है कि डिज़ाइन में अगर सुई की नोक के बराबर भी निशान है और अगर इस निशान से सुई डालें तो दूसरी तरफ भी वह उसी निशान पर ही बाहर निकलेगी।

(वस्त्र छपाई एवं रंगाई परम्परा पर केन्द्रित अंकन से साभार)